

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का शैक्षणिक उपलब्धि में भावनात्मक और सामाजिक कारकों की भूमिका

ओमप्रकाश कुमार¹ and डॉ. निसार अहमद कुमार²

शोधार्थी, विभाग शिक्षा¹

शोध निर्देशक, विभाग शिक्षा²

सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य यह जांच करना है कि क्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध है। इस सर्वेक्षण अध्ययन में, जांचकर्ताओं ने जनसंख्या से नमूना चुनने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया। छात्रों को विकलांगता और स्थानीयता के आधार पर स्तरीकृत किया गया था। नमूना भारत के तमिलनाडु के तंजावुर जिले के दस स्कूलों के 350 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का है। वर्तमान अध्ययन के लिए इस्तेमाल किए गए उपकरण ए.के.पी. सिन्हा और आर.पी. सिन्हा (2007) द्वारा विकसित समायोजन सूची और जांचकर्ता द्वारा विकसित शैक्षणिक उपलब्धि थे। वर्तमान अध्ययन के लिए डेटा का विश्लेषण करने के लिए इस्तेमाल की गई सांख्यिकीय तकनीक सहसंबद्धता के गुणनफल गुणांक थी। निष्कर्ष बताते हैं कि, शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षणिक समायोजन के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है।

प्रमुख शब्द: प्रेरक समायोजन, सामाजिक समायोजन, अकादमिक समायोजन

प्रस्तावना

स्कूल किसी भी बच्चे के लिए सबसे बड़ा सामाजिक संस्थान होता है। यह घर के बाहर की दुनिया से बच्चे का पहला संपर्क होता है। 12 साल की उम्र तक, एक बच्चा स्कूल में प्रतिदिन 5 से 7 घंटे बिताता है। स्कूल सबसे महत्वपूर्ण स्तंभों में से एक है जिस पर बच्चे का व्यक्तित्व विकसित होता है। बच्चे सीखने की प्रक्रिया और

गतिविधि, सामाजिक संचार, भावनाओं को संभालना और घर और स्कूल में दिन-प्रतिदिन की दिनचर्या को प्रबंधित करने जैसी विभिन्न क्षमताओं में दक्षता सीखते हैं। वास्तव में, बढ़ता हुआ बच्चा अपनी विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तात्कालिक वातावरण यानी घर और स्कूल पर निर्भर होता है। इसलिए, चर्चा का विषय यह है कि बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्कूल की सुविधाओं को कैसे बढ़ाया और बेहतर बनाया जा सकता है। जब से प्रत्येक व्यक्ति परिवार को छोड़कर स्कूल जाता है, तब से वह पूरे अद्वितीय व्यक्तित्व और पर्यावरण के बीच समायोजन की एक लंबी श्रृंखला से गुजरता है।

हर लड़के और लड़की की यह प्रबल इच्छा होती है कि वह एक स्वस्थ शरीर, उन्नत बौद्धिक क्षमता, अधिक भावनात्मक संतुलन और सामाजिक समूहों में अधिक भागीदारी वाला व्यक्ति बने, ऐसी विशेषताएँ व्यक्ति के व्यक्तित्व को इतना निखारती हैं कि माता-पिता, शिक्षक और समाज के अन्य महत्वपूर्ण सदस्य भी इस इच्छा को प्रोत्साहित करते हैं। सी.वी. गुड (1959) के अनुसार, समायोजन पर्यावरण में होने वाले परिवर्तनों के अनुसार उचित व्यवहार को अपनाने और अनुकूलित करने की प्रक्रिया है। यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक जीवित जीव अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की संतुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के बीच संतुलन बनाए रखता है। इस प्रकार समायोजन स्कूल में छात्रों की उपलब्धि और व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करता है। शिक्षा समाज की शक्ति है और सामाजिक-आर्थिक विकास का बीज और फूल भी है। यह मनुष्य को अज्ञानता से ज्ञान की ओर, सामाजिक पिछड़ेपन की छाया से सामाजिक सुधार के प्रकाश की ओर और धीमी गति से विकास से तीव्र सामाजिक और आर्थिक विकास की ओर ले जाती है। यूएनएससीईओ महासम्मेलन ने माना कि "अशिक्षा सामाजिक और आर्थिक विकास में एक गंभीर बाधा है और इसलिए आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए राष्ट्रीय योजनाओं के सफल कार्यान्वयन के लिए साक्षरता का विस्तार एक पूर्वापेक्षा है"। शिक्षा का उद्देश्य मानव विकास है। यह जन्म से लेकर मृत्यु तक हमारे जीवन में व्याप्त रहती है। शिक्षा का सामान्य उद्देश्य व्यक्ति को सफल जीवन जीने के लिए तैयार करना है। शिक्षा हमें जीवन में आने वाली समस्याओं और बाधाओं को दूर करने में सक्षम बनाती है। आधुनिक समाज जटिल और प्रतिस्पर्धी हो गया है। यह अंतरिक्ष, तीव्र औद्योगिकीकरण और तकनीकी उन्नति का युग है। इसलिए, शैक्षिक लक्ष्य और उद्देश्य अपने आयाम और प्राथमिकताएँ बदलते हैं। ये परिवर्तन सामान्य और विशेष दोनों हैं। वर्तमान समय शिक्षा के माध्यम से छात्रों से उच्च संवेदनशीलता, सामान्य ज्ञान और सर्वोच्च उत्कृष्टता की अपेक्षा करता है। शिक्षा मनुष्य को स्वयं और समाज के साथ समायोजन करना सिखाती है। हम मनुष्य भूख और नुकसान से सुरक्षा जैसी शारीरिक आवश्यकताओं के साथ समायोजन करने का प्रयास करते

हैं और संघर्ष करते हैं। हम भावनात्मक सुरक्षा, स्वीकृति आदि जैसी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को भी पूरा करने का प्रयास करते हैं। समृद्ध जीवन जीने और संतुष्ट करने के लिए विभिन्न आवश्यकताओं और आवश्यकताओं वाले ऐसे जटिल वातावरण में, हमारे और हमारे पर्यावरण के बीच बातचीत की एक प्रक्रिया होती है। इस प्रक्रिया में हम या तो अपने परिवेश को प्रबंधित करने का प्रयास करते हैं या संघर्ष करते हैं या हम अपने जटिल पर्यावरण को साफ रखने का प्रयास करते हैं। उनके समायोजन को व्यक्ति और उसके पर्यावरण के बीच सामंजस्य या व्यक्ति और उसके पर्यावरण के बीच कुसमायोजन कहा जा सकता है। व्यक्ति को कई समायोजन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जो सीधे व्यक्ति की सामान्य दक्षता को प्रभावित करता है और उसे कम करता है। समस्याओं वाले व्यक्ति अपनी बौद्धिक क्षमताओं के अनुरूप शैक्षिक गतिविधियों को प्राप्त करने में सक्षम नहीं होते हैं। ऐसे अन्य कारक भी हैं जो बच्चे के शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकते हैं। व्यक्तित्व लक्षण भी व्यक्ति के जीवन में समायोजन को निर्धारित करते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य

“अपने मन की देखभाल करना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि अपने शरीर की देखभाल करना।”

किसी व्यक्ति के समग्र स्वास्थ्य के हिस्से के रूप में, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य या कल्याण किसी व्यक्ति को अपने जीवन को सफलतापूर्वक प्रबंधित करने में सक्षम बनाने के लिए एक आवश्यक शर्त है। मानसिक स्वास्थ्य भावनात्मक और आध्यात्मिक लचीलापन है जो किसी व्यक्ति को जीवन का आनंद लेने और दर्द, पीड़ा और निराशा से बचने की अनुमति देता है। यह कल्याण की एक सकारात्मक भावना है और अपने और दूसरों की गरिमा और मूल्य में एक अंतर्निहित विश्वास है। मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा मानव जाति जितनी पुरानी है। हाल के वर्षों में नैदानिक मनोचिकित्सकों के साथ-साथ शिक्षकों ने मानसिक स्वास्थ्य के अध्ययन पर उचित ध्यान देना शुरू कर दिया है। हालाँकि, भारत में अपेक्षाकृत कम किया गया है। क्रेथौसर (1965) द्वारा परिभाषित मानसिक स्वास्थ्य उन व्यवहारों, विश्वासों और भावनाओं को संदर्भित करता है जो एक व्यक्ति के रूप में व्यक्तिगत प्रभावशीलता, सफलता, खुशी और कार्य करने में उत्कृष्टता के समग्र स्तर को निर्धारित करते हैं। यह उन लक्ष्यों के विकास और निर्धारण पर निर्भर करता है जो एक सक्षम, प्रभावी इंसान के रूप में खुद पर विश्वास के यथार्थवादी सफल रखरखाव की अनुमति देने के लिए न तो बहुत अधिक हैं और न ही बहुत कम हैं। अतः मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति अपने इरादों में दृढ़ होता है और दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों और तनावों से कम से कम परेशान होता है। इस प्रकार मानसिक स्वास्थ्य की

अवधारणा व्यक्ति के लिए 'गेस्टाल्ट' दृष्टिकोण को अपनाती है। यह व्यक्तित्व लक्षणों और व्यवहार की सभी अवधारणाओं को एक साथ शामिल करती है। इसे व्यक्ति की व्यवहारिक विशेषता के रूप में भी समझा जा सकता है। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति वांछनीय दृष्टिकोण, स्वस्थ मूल्यों और धार्मिक आत्म-अवधारणा और शब्द के समग्र वैज्ञानिक अर्थ के सामंजस्यपूर्ण जुड़ाव को प्रदर्शित करता है। एरिकसन (1936), राइस (1969), हाल्लॉक (1972) जैसे कई मनोवैज्ञानिकों ने एक ही लहजे में अपने विचार व्यक्त किए हैं। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति को एक गतिशील और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति के रूप में भी समझा जाना चाहिए जो अपने अच्छे लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए साधनों के चुनाव में काफी सुसंगत पाया जाता है (आनंद, 1988)। अतः मानसिक स्वास्थ्य हममें और दूसरों की एक व्यवहारिक अवधारणा है

उपलब्धि प्रेरणा और समय

उपलब्धि प्रेरणा मानव प्रयास के कई क्षेत्रों में देखी जा सकती है, चाहे वह नौकरी, स्कूल, घर निर्माण या एथलेटिक गतिविधियाँ हों। माता-पिता की अपने बच्चों से अपेक्षाएँ भी उपलब्धि प्रेरणा के विकास में महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। जब माता-पिता अपने बच्चों से कड़ी मेहनत करने और सफलता के लिए प्रयास करने की अपेक्षा करते हैं, तो वे उन्हें ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे और उपलब्धि-सूचक व्यवहार के लिए उनकी प्रशंसा करेंगे। उपलब्धि प्रेरणा का सार यह है कि यह केवल प्राप्त करने की इच्छा नहीं है, इसका अर्थ 'कार्य में उत्कृष्टता के मानकों को प्राप्त करने का प्रयास' भी है। यह उत्कृष्टता के साथ प्रदर्शन करने की उत्सुक इच्छा है। समायोजन घर, स्कूल, कार्यस्थल, बड़े होने और बुढ़ापे की जीवन स्थितियों में एक संगठनात्मक व्यवहार है। यह सहनीय स्तर पर बुनियादी आवेगों को नियंत्रित करने, अपनी क्षमताओं पर विश्वास करने और वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है। यह बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक और व्यावसायिक पहलुओं में भी स्व-प्रेरित वृद्धि और विकास में मदद करता है। यह छात्र की सफलता और विकास का एक संकेतक है। उच्चतर माध्यमिक छात्रों के लिए, जो समाज के सक्रिय किशोर हैं, छात्रों के लिए परिस्थितियों के अनुकूल ढलना महत्वपूर्ण है ताकि वे अपनी पढ़ाई के साथ-साथ अपने निजी जीवन में भी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकें।

स्वस्थ दृष्टिकोण

वास्तविकता के साथ स्वस्थ संबंध स्वस्थ दृष्टिकोण से बहुत मदद करता है। ये दृष्टिकोण, जैसा कि आप सामान्य मनोविज्ञान से जानते हैं, मन की वे स्थितियाँ हैं जिन्हें हम काम, स्कूल, धर्म, नस्लीय समूहों, मृत्यु और हमारे जीवन में आने वाली हज़ारों अन्य चीज़ों के प्रति अपने दृष्टिकोण में अपनाते हैं।

उदाहरण के लिए, नस्लीय समूहों के दृष्टिकोण को लें। जब हम यहूदियों, या नीग्रो, या ओरिएंटल लोगों के प्रति गहरी घृणा और पूर्वाग्रह से ग्रस्त होते हैं, तो हमारे लिए मानसिक रूप से स्वस्थ रहना असंभव है। बैक्टीरिया और विषाक्त पदार्थ शारीरिक स्वास्थ्य के लिए उतने ही हानिकारक हैं जितने घृणा और पूर्वाग्रह मानसिक स्वास्थ्य के लिए। इसी तरह, अगर हम अपने काम को लेकर चिंतित हैं या भावनात्मक रूप से व्याकुल हैं, तो मानसिक स्थिरता बनाए रखना मुश्किल है। या अगर स्वास्थ्य के बारे में हमारी चिंता मायोपिया या हाइपरऑब्स्ट्रक्शन की ओर ले जाती है, तो मानसिक स्वास्थ्य में व्यवधान का खतरा होता है। यह ध्यान रखना दिलचस्प और शिक्षाप्रद है कि यह बुनियादी रवैया अक्सर व्यक्ति के मूल्यों के मापदंडों के भीतर होता है और इसलिए एक स्वस्थ रवैये का विकास काफी हद तक इस ज़रूरत की पूर्ति पर निर्भर करेगा।

मानसिक योग्यता

मानसिक योग्यता की प्राप्ति के लिए सोच और अन्य मानसिक क्षमताओं पर नियंत्रण मौलिक रूप से महत्वपूर्ण है। हम पहले ही देख चुके हैं कि यह कहना सही नहीं होगा कि मानसिक स्वास्थ्य और मानसिक योग्यता की कमी मानसिक बीमारी का संकेत है। फिर भी बुद्धि, स्वायत्तता और स्मृति जैसे कारकों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता ही मानसिक स्थिरता को बढ़ावा देती है। यह निश्चित रूप से ध्यान देने योग्य है कि भावनात्मक रूप से परेशान, विक्षिप्त या मनोरोगी व्यक्ति में मानसिक योग्यता का गुण नहीं होता है। और इसके विपरीत योग्यता मानसिक रूप से स्थिर व्यक्ति से जुड़ी होती है। इसलिए, मानसिक योग्यता को मानसिक स्थिरता का एक विश्वसनीय संकेतक माना जा सकता है।

विचार और व्यवहार का एकीकरण

मानसिक स्वास्थ्य का महत्व विचार और व्यवहार का एकीकरण भी है। हम जो सोचते हैं और जो करते हैं, उसके बीच का अंतर कुछ ऐसा है जिसे हम मानसिक स्थिरता से कभी बढ़ावा नहीं दे सकते। ईमानदारी व्यक्तिगत ईमानदारी के कारक से जुड़ी हुई है, जो लगातार और भरोसेमंद व्यवहार से निर्धारित होती है जो उन लोगों में विश्वास, आत्मविश्वास और आत्मविश्वास को प्रेरित करती है जिनके साथ वह व्यवहार करता है।

रोगग्रस्त झूठे, ठग, पाखंडी और अपराधी सभी में व्यक्तिगत ईमानदारी की कमी होती है और वे रोगग्रस्त ईमानदारी की विशेषता रखते हैं। ऐसे कई मामलों में, जो संगठन के साथ-साथ प्रक्रिया की नैतिक स्थिरता को भी खराब करते हैं, इस मानदंड को पिछले खंड में उल्लिखित व्यक्तिगत ईमानदारी की अवधारणा से संबंधित होना चाहिए।

उद्देश्य

1. यह पता लगाना कि क्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के लड़कों के भावनात्मक, सामाजिक समायोजन और समायोजन तथा शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध है।
2. यह पता लगाना कि क्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के लड़कों के भावनात्मक, सामाजिक समायोजन और समायोजन तथा शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध है।

शोध पद्धति

अन्वेषकों ने तंजावुर जिले में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के लड़कों के भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षिक समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करने के लिए शोध की सर्वेक्षण पद्धति को अपनाया। अन्वेषकों ने जनसंख्या से नमूना चुनने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया। छात्रों को लिंग और स्थानीयता के आधार पर स्तरीकृत किया गया था। नमूना तंजावुर जिले के दस स्कूलों के 350 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों से बना था।

डेटा विश्लेषण

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षिक समायोजन और समायोजन तथा शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। तालिका 1 से पता चलता है कि, गणना किए गए मान 0.245, 0.216 और 0.316, 0.05 महत्व के स्तर पर 0.098 के मान से अधिक हैं। इसलिए, शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षणिक समायोजन के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के बच्चों के भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षणिक समायोजन, समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। तालिका 2 से, यह पाया गया है कि, सहसंबंध 'y' के गुणनफल गुणांक द्वारा गणना की गई सहसंबंध 'y' मान 0.290, 0.283, 0.243 है और सहसंबंध का मान 0.05 महत्व के स्तर पर 0.098 से अधिक है। इसलिए, शैक्षणिक उपलब्धि

के संबंध में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के लड़कों के भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षणिक समायोजन के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की लड़कियों के भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षणिक समायोजन और समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। तालिका 3 से, यह पाया गया है कि सहसंबंध 'y' मान 0.276 और गणना गुणांक 0.237 सहसंबंध का परिकलित गुणांक 'y' मान 0.093, 0.05 महत्व के स्तर पर 0.098 के मान से कम है। अतः, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के सामाजिक समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं है। भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षणिक समायोजन और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं है। तालिका 4 से पता चलता है कि, परिकलित 'y' मान 0.246, 0.220 और 0.311, 0.05 महत्व के स्तर पर 0.098 के मान से अधिक हैं।

तालिका 1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षणिक समायोजन और समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध

भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षणिक समायोजन एवं समायोजन बनाम शैक्षणिक उपलब्धि	परिकलित 'y' मान	5% स्तर पर टिप्पणियाँ
शैक्षिक उपलब्धि		
भावनात्मक समायोजन	0.245	महत्वपूर्ण
सामाजिक समायोजन	0.216	महत्वपूर्ण
शैक्षिक समायोजन	0.316	महत्वपूर्ण
समायोजन	0.351	महत्वपूर्ण

तालिका 2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के लड़कों के भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षणिक समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध

भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षणिक समायोजन एवं समायोजन बनाम शैक्षणिक उपलब्धि	परिकलित 'y' मान	5% स्तर पर टिप्पणियाँ
शैक्षिक उपलब्धि		
भावनात्मक	0.290	महत्वपूर्ण

समायोजन		
सामाजिक समायोजन	0.283	महत्वपूर्ण
शैक्षिक समायोजन	0.243	महत्वपूर्ण
समायोजन	0.362	महत्वपूर्ण

तालिका 3. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की लड़कियों के भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षणिक समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध

भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षणिक समायोजन एवं समायोजन बनाम शैक्षणिक उपलब्धि	परिकलित 'y' मान	5% स्तर पर टिप्पणियाँ
शैक्षिक उपलब्धि		
भावनात्मक समायोजन	0.276	महत्वपूर्ण
सामाजिक समायोजन	0.093	महत्वपूर्ण
शैक्षिक समायोजन	0.237	महत्वपूर्ण
समायोजन	0.278	महत्वपूर्ण

तालिका 4. ग्रामीण क्षेत्रों में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षणिक प्रदर्शन समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध

भावनात्मक, सामाजिक,	परिकलित	5% स्तर पर
---------------------	---------	------------

शैक्षणिक समायोजन एवं समायोजन बनाम शैक्षणिक उपलब्धि	'y' मान	टिप्पणियाँ
शैक्षिक उपलब्धि		
भावनात्मक समायोजन	0.246	महत्वपूर्ण
सामाजिक समायोजन	0.220	महत्वपूर्ण
शैक्षिक समायोजन	0.311	महत्वपूर्ण
समायोजन	0.344	महत्वपूर्ण

निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षणिक समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समायोजन के बीच कम सकारात्मक संबंध है। ये निष्कर्ष मनकासंगभाई और यशवानभाई (2014), येल्लैया (2012) और कुमार और कधीलारन (2010) के निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों को अपने माता-पिता के साथ-साथ शिक्षकों से भी कुछ मनोवैज्ञानिक सहायता की आवश्यकता होती है। इसलिए, माता-पिता और शिक्षकों को अपने स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों को अधिक मार्गदर्शन और सहायक देखभाल प्रदान करनी चाहिए। सभी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को भावनात्मक और समायोजन समस्याओं वाले छात्रों को परामर्श सेवाएँ प्रदान करने को महत्व देना चाहिए। मार्गदर्शन और परामर्श सेवाएँ प्रदान करने के लिए एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित परामर्शदाता नियुक्त किया जाना चाहिए। स्कूलों को न केवल अपने छात्रों की उच्च उपलब्धि को महत्व देना चाहिए, बल्कि उनकी शिक्षा को भी महत्व देना चाहिए ताकि वे खुद और अपने पर्यावरण के साथ मिल सकें। स्कूलों को छात्रों के माता-पिता के साथ लगातार बैठकें करनी चाहिए और उन्हें अपने बच्चे की स्थिति के बारे में बताना चाहिए। स्कूलों को स्कूल के अंदर छात्रों के व्यवहार का एक अलग रिकॉर्ड रखना चाहिए और

भावनात्मक रूप से अपरिपक्व छात्रों की पहचान करनी चाहिए। इससे उन्हें परामर्श देने में मदद मिलेगी। सभी सरकारी स्कूलों को अब प्रयोगशाला, पुस्तकालय और सुव्यवस्थित कक्षाओं जैसी सभी सुविधाओं से सुसज्जित किया जाना चाहिए। छात्रों के अपने साथियों और उनके परिवारों के साथ समायोजन को बेहतर बनाने के लिए कुछ संवर्धन कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं जैसे कि नुक्कड़ नाटक, समूह असाइनमेंट, समूह शिक्षण, समूह नृत्य और अन्य टीम गतिविधियाँ। शिक्षक अपने छात्रों के लिए सबसे बड़े रोल मॉडल होते हैं। इसलिए, सबसे पहले शिक्षक के पास समायोजन और भावनात्मक स्थिरता का उच्च स्तर होना चाहिए और उसे अपने छात्रों को यह दिखाना चाहिए कि दूसरों के साथ कैसे घुलना-मिलना है।

संदर्भ

1. धुरंधर, डी., और अग्रवाल, ए. (2015)। विज्ञान और कला धाराओं के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर तुलनात्मक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल एंड साइकोलॉजिकल रिसर्च, 4(2), 20-22।
2. जयचंद्रन, पी. (2017)। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच मानसिक स्वास्थ्य और साथियों के साथ संबंध। स्कॉलरली रिसर्च जर्नल फॉर ह्यूमैनिटीज एंड इंग्लिश लैंग्वेज, 4(19), 4268-4275।
3. माओहरन, जे.एल., और डॉस, सी. (2007)। उच्चतर माध्यमिक छात्रों के घरेलू वातावरण और समायोजन के बीच संबंध। शिक्षा पर शोध और चर्चा, 5(2), 10-11।
4. नेहरा, एस. (2014)। नौवीं कक्षा के छात्रों के समायोजन और भावनात्मक परिपक्वता के बीच संबंध। शिक्षा सम्मेलन, 3(2), 67-75।
5. राव, एम.डी.वी.जे., और रेड्डी, एस.वी. (2016)। हाई स्कूल के छात्रों में उपलब्धि प्रेरणा पर स्कूल के माहौल, घर के माहौल और मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति का प्रभाव। पेरीपेक्स - इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च, 5(4), 426-429।
6. शब्दिमकी (2010)। मानसिक स्वास्थ्य पैमाना (जैसा कि थानेश और जैस्मीन शीला बंसी, 2013 में उद्धृत किया गया है, कक्षा XI के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षणिक उपलब्धि पर एक अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. शोध निबंध, तमिलनाडु शिक्षक शिक्षा विश्वविद्यालय, चेन्नई)।
7. सिन्हा, ए.के.पी., और सिन्हा, आर.पी. (2007)। स्कूली छात्रों के लिए समायोजन सूची के लिए मैनुअल। आगरा: राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक निगम।

8. सुरेखा, (2008)। छात्रों के समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध। समीक्षा जर्नल ऑफ फिलॉसफी एंड सोशल साइंस, मार्च 2009।
9. उषा (2007)। बच्चे का भावनात्मक समायोजन और परिवार की स्वीकृति: उपलब्धि के लिए सहसंबंध। एडु ट्रैक, 6(10)। http://www.who.int/features/factfiles/mental_health/en/ से लिया गया
10. विश्व स्वास्थ्य संगठन। (2014)। मानसिक स्वास्थ्य: खुशहाली की एक स्थिति। http://www.who.int/features/factfiles/mental_health/en/ से लिया गया
11. सुरेखा, (2008)। "छात्रों के समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध"। एडु ट्रैक, खंड 7, संख्या 7, पृष्ठ 26-31
12. थंबावल एम.यू., (2010)। "व्यक्तिगत-सामाजिक और व्यावसायिक समायोजन को बढ़ाने के लिए सलाह"। सरकारी राज्य स्वदेशी उपक्रम सरकारी राज्य शिक्षा विकास ट्रस्ट फंड के कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए प्रेरणा/अभिविन्यास। से लिया गया
13. वर्मा आर. कुमार और कुमारी एस., (2016)। "प्राथमिक स्तर पर बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि उनके समायोजन के संबंध में" । ग्लोबल जर्नल फॉर रिसर्च एनालिसिस, खंड 5, अंक 1, पृष्ठ 310-312।
14. येल्लैया, (2012)। "हाई स्कूल के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर समायोजन का एक अध्ययन" । इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज एंड इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च, खंड 1, अंक 5, पृष्ठ 84-94।
15. कागल, श्रीश (2014)। "विशेष स्कूलों में दृष्टिबाधित छात्रों का भावनात्मक, सामाजिक और शैक्षणिक समायोजन" । इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एंड रिसर्च पब्लिकेशंस, खंड 4, अंक 3, पृष्ठ 1-4।